Emerging Trends in Education [Vol. 4 - No. 1 . pp 99-103]

हाई स्कूल कक्षाओं में अध्ययनरत मूक–बधिर एवं दृष्टिहीन छात्रों एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

मनोज कुमार त्यागी

विश्व में भारत की गणना विकासशील देश के रूप में की जाती है। यह विकासशील राष्ट्र अन्य विकासशील राष्ट्रों से भिन्न समाजवादी, पंथनिरपेक्ष एवं लोकतान्त्रिक गणराज्य के रूप में अपनी एक अलग छाप छोड़ता है। इस राष्ट्र में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति का मूल अधिकार है कि न केवल उसके शारीरिक जीवन की रक्षा की जाय, अपितु उसे समुचित शिक्षा भी प्रदान की जाय, जिससे वह सम्मानपूर्वक जीविकोपार्जन कर सके तथा आत्म–निर्भर बनकर सुखमय जीवन व्यतीत कर सके।

संयुक्त राष्ट्र संघ (U.N.O.) के प्रतिवेदन के अनुसार विकासशील देशों की जनसंख्या का दस प्रतिशत भाग किसी न किसी प्रकार से विकलांग हैं। जहां अशिक्षा हो, अन्धविश्वास हो, गरीबी हो, स्वच्छ पानी तक उपलब्ध न हो, चिकित्सा व्यवस्था देवी–देवताओं के भरोसे चलती हो, वहां अपंगता का उपर्युक्त प्रतिशत स्वाभाविक है। एक अरब से अधिक की जनसंख्या में दस करोड़ व्यक्ति अतिवृद्ध, कुष्ठरोगी, अशक्त, मानसिक विकलांग, मूक–बधिर, नेत्रहीन, अस्थि विकलांग आदि हैं। यह आंकड़े 25 वर्षो में दो गुना हो जाने की आशंका है क्योंकि तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या, नगरीकरण, कुपोषण, औद्योगीकरण, युद्ध, दंगे, आतंकवाद, परिवहन दुर्घटनाएँ, नशाखोरी, आदि न जाने कब, किसे और कहाँ किस परिस्थिति में अपने अन्दर निगल कर विकलांग, अक्षम, अशक्त या क्षतिग्रस्त की अवस्था में बदल दे, यह कहना सम्भव नहीं है। इन परिस्थितियों के कारण व्यक्ति का सामान्य रूप खण्डित हो जाता है परन्तु हमें यह कदापि नहीं भूलना चाहिए कि विकलांग कहे जाने वाले वर्ग के लोगों ने उत्तम चिकित्सक, साहित्यकार, शिक्षाशास्त्री, वकील, व्यापारी एवं उत्तम कार्यकर्ता प्रदान किये हैं।

नेत्रहीनों को समस्त विकलांग एवं सामान्य बालकों के साथ समाहित करके विभिन्न अध्ययन हुए हैं किन्तु मूक–बधिरों के साथ तुलनात्मक अध्ययन बहुत ही कम हुआ है। अनुसंधाता द्वारा प्रस्तुत अनुसंधान कार्य इसी सन्दर्भ में माध्यमिक स्तर पर किया गया है।

शोध का उद्देश्यः– शोध के उद्देश्य निम्नवत् हैंः–

- मूक–बधिर एवं दृष्टिहीन छात्रों के समायोजन का अध्ययन करना।
- मूक–बधिर एवं दृष्टिहीन छात्रों के समायोजन के विभिन्न आयामों का अध्ययन करना।

* प्रवक्ता, शिक्षाशास्त्र विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

शोध की परिकल्पनाः– शोध के उद्देश्य से सम्बन्धित निम्नलिखित शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया :–

- मूक–बधिर एवं दृष्टिहीन छात्रों के समायोजन स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- मूक–बधिर एवं दृष्टिहीन छात्रों के समायोजन के विभिन्न आयामों पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि :– प्रस्तुत शोध का प्रारूप वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि पर आधारित है।

समग्र :– वाराणसी जनपद में स्थित माध्यमिक स्तर के दृष्टिहीन या अन्ध विद्यालयों और मूक–बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत समस्त दृष्टिहीन और मूक–बधिर बालक–बालिकाएँ इस शोध के समग्र हैं।

न्यादर्श या प्रतिदर्श :– शोध की सुविधा की दृष्टि से दृष्टिहीन और मूक–बधिर विद्यालयों में पढ़ने वाले हाईस्कूल स्तर के 50 मूक बधिर बालक–बालिकाओं और 50 दृष्टिहीन बालक–बालिकाओं का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि के लाटरी विधि द्वारा किया गया।

शोध उपकरणः– बालक–बालिकाओं के समायोजन के मापन हेतु राव (1975) द्वारा निर्मित 'बाल समायोजन आविष्कारिका' (Children's Adjustment Inventory) का प्रयोग किया गया हैं। इस आविष्कारिका में 73 वक्तव्य (Items) हैं, जो हाई स्कूल कक्षाओं में पढ़ने वाले बालक–बालिकाओं के समायोजन की विशेषताओं का वर्णन करते हैं। इस आविष्कारिका के दो प्रारूप (Form) है–पहला, अभिभावक प्रारूप एवं दूसरा, शिक्षक प्रारूप। इस शोध में केवल शिक्षक प्रारूप का ही प्रयोग किया गया है जो हाईस्कूल स्तर पर पढ़ने वाले दृष्टिहीन एवं मूक बधिर विकलांग बालक–बालिकाओं से सम्बन्धित हैं। इस आविष्कारिका में समायोजन के कुल छः आयामों का समावेश किया गया हैः–

1. समाज विरोधी प्रवृत्तियाँ (Antisocial Tendencies)
2. प्रत्याहार प्रवृत्तियाँ (Withdrawal Tendencies)
3. घबराहट की प्रवृत्ति (Nervous Habits)
4. सामाजिक कौशल (Social Skill)
5. आक्रामक प्रवृत्तियाँ (Aggressive Tendencies)
6. अपर्याप्तता की भावना (Feeling of Inadequacy)

इस आविष्कारिका के विश्वसनीयता की गणना सम–विषम विधि (Odd-Even Method) और अर्द्ध–विच्छेद विधि (Split- half Method) द्वारा की गयी है। स्पीयरमैन के सूत्रों का प्रयोग करने पर पूरे आविष्कारिका का विश्वसनीयता फलांक 0.57 आता है।

बॉस एवं वर्ग (1959) द्वारा प्रतिपादित 'समूह–नामित–समूह विधि' से समायोजित और

कुसमायोजित समूहों के समायोजन में सार्थक अन्तर के आधार पर आविष्कारिका की प्रमाणिकता को शुद्ध किया गया हैं।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीः– आंकड़ों के सारणीयन के पश्चात् उसके सांख्यिकी विश्लेषण हेतु सामान्य विवरणात्मक सांख्यिकी के अतिरिक्त निष्कर्षात्मक सांख्यिकी का भी प्रयोग किया गया हैं। इस निमित्त मध्यमानों के बीच अन्तर की सार्थकता (Significance) को ज्ञात करने के लिए लिए टी–परीक्षण (T-test) का प्रयोग किया गया है।

व्याख्या एवं विवेचनाः– चयनित मूक–बधिर और दृष्टिहीन छात्रों के सामाजिक समायोजन के स्तर को ज्ञात करने हेतु शोध–कर्ता ने राव द्वारा निर्मित बाल समायोजन आविष्कारिका (Children's Adjustment Inventory) का प्रयोग किया। शोधकर्ता ने चयनित समूहों को पढ़ाने वाले कक्षाध्यापकों की सहायता से आंकड़ा प्राप्त किया। कक्षाध्यापकों की प्रतिक्रिया 50 मूक–बधिर एवं 50 दृष्टिहीन छात्रों पर थी। आविष्कारिका द्वारा समायोजन सम्बन्धी प्राप्ताकों को सारणीबद्ध करके प्रत्येक समूह के अलग–अलग मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण की गणना की गयी जो सारणी 1 में निम्नवत् प्रस्तुत है :

सारणी–1– मूक–बधिर एवं दृष्टिहीन सम्पूर्ण छात्रों के समायोजन का मध्यमान, मानक विचलन और टी का विवरण

क्र0सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान
1.	मूक वधिर सम्पूर्ण छात्र	50	36.5	9.44	5.88*
2.	दृष्टिहीन सम्पूर्ण छात्र	50	48.5	10.92	

0.01 स्तर पर सार्थक

सारणी–1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत मूक–बधिर और दृष्टिहीन छात्रों के सामान्य समायोजन में अन्तर है। मध्यमान के अंतर के आधार पर ऐसा कहा जा सकता है कि दृष्टिहीन छात्रों की तुलना में मूक–बधिर छात्रों का समायोजन स्तर उच्च है। अर्थात मूक–बधिर छात्र, दृष्टिहीन छात्रों की तुलना में अपने को सामाजिक स्तर पर आसानी से समायोजित कर लेते हैं।

मूक–बधिर और दृष्टिहीन छात्रों के विभिन्न आयामों पर समायोजन का अध्ययनः– इस शोध में सम्मिलित दोनों समूहों के सम्पूर्ण छात्रों के समायोजन में सार्थक अन्तर मिलने पर उनमें समायोजन का गहराई से अध्ययन करने के लिए समायोजन आविष्कारिका में निहित विभिन्न आयामों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। दोनों समूहों के आंकड़ों को समायोजन के आयामों के अनुसार तालिकाबद्ध कर उनका अलग–अलग मध्यमान, मानक विचलन और टी की गणना की गयी है। जो निम्नवत् हैः–

सारणी–2– मूक–बधिर और दृष्टिहीन सम्पूर्ण छात्रों का समायोजन के विभिन्न आयामों पर मध्यमान, मानक विचलन और टी का विवरण

क्र0सं0	समायोजन आयाम	मूक बधिर छात्र संख्या–50		दृष्टिहीन छात्र सं050		
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	टी0 का मान
1.	समाज विरोधी प्रवृत्तियाँ	6.46	2.93	8.34	2.90	3.23*
2.	प्रत्याहार प्रवृत्तियाँ	6.12	3.26	9.32	3.42	4.79*
3.	घबराहट की प्रवृत्तियाँ	3.18	1.57	4.56	1.74	4.18*
4.	समाजिक कौशल	2.96	1.31	4.42	1.78	4.69*
5.	आक्राकम प्रवृत्तियाँ	5.20	2.71	8.84	2.96	6.43*
6.	अपर्याप्तता की भावना	4.98	1.97	7.32	2.96	4.67*

*0.01 स्तर पर सार्थक

सारणी–2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि समायोजन के उपर्युक्त सभी पाँच आयामों में मूक बधिर एवं दृष्टिहीन विद्यार्थियों में मध्य .01 स्तर पर सर्थक अंतर है। मध्यमान के अंतर से स्पष्ट है कि लगभग सभी आयामों में दृष्टिहीन विद्यार्थी मूक–बधिर विद्यार्थियों की तुलना में अधिक समायोजित हैं। प्रथम आयाम समाज विरोधी प्रवृत्तियाँ (Anti-Social Tendencies) मूक छात्रों की तुलना में दृष्टिहीन छात्रों में अधिक पायी गयीं। समाज विरोधी प्रवृत्तियाँ जैसे– हत्या करना, झूठ बोलना, चोरी करना, मारना आदि दृष्टिहीन छात्रों में अधिक पायी गयीं। द्वितीय आयाम प्रत्याहार प्रवृत्तियाँ भी दृष्टिहीन छात्रों में अधिक पायी गयीं। द्वितीय दृष्टिहीन छात्रों में किसी आकांक्षा का प्रभाव स्पष्ट दिखायी देता है। इस परिणाम से स्पष्ट है कि दृष्टिहीन छात्र अपनी दृष्टिहीनता के कारण कार्यों के बारे में सही रूप से समझ नहीं पाते हैं। इसलिए वे किसी चुनौती का सामना करने से पहले ही मैदान छोड़कर भाग जाते हैं।

समायोजन का तीसरा आयाम घबराहट की प्रवृत्तियाँ (Nervous Habits) हैं। जब हम घबराहट की प्रवृत्तियों पर दृष्टिपात करते हैं तो यह ज्ञात होता है कि मूक–बधिर छात्रों की अपेक्षा दृष्टिहीन छात्रों में घबराहट की प्रवृत्ति अधिक है। दृष्टिहीन छात्र इस प्रतियोगितात्मक विद्यालयी वातावरण में अपने अनुभव की कमी के कारण अधिक घबराहट महसूस करते हैं। चतुर्थ आयाम सामाजिक कौशल (Social Skills) का है। इस आयाम पर मूक–बधिर छात्रों की तुलना में दृष्टिहीन छात्र सामाजिक कौशल, सामाजिक भूमिकाओं और खेल–कूद आदि के स्तर पर अधिक सहज हैं। पांचवा आयाम आक्रामक प्रवृत्तियाँ (Aggressive Tendencies) हैं। मूक–बधिर छात्रों की तुलना में दृष्टिहीन छात्र अधिक आक्रामक होते हैं। ये छात्र किसी को मानसिक या शारीरिक चोट पहुँचाने अथवा अपने विचारों को ही आगे बढ़ाने तथा विरोध के

बावजूद अपनी योजना को क्रियान्वित करने में आगे रहते हैं।

छठवां तथा अन्तिम आयाम अपर्याप्तता की भावना (feeling of Inadequacy) है। इस आयाम पर मूक–बधिर छात्रों की तुलना में दृष्टिहीन छात्रों द्वारा अपनी अपर्याप्तता की भावना को अधिक तूल दिया जाता है और वे अपनी किसी विकलांगता या कमजोरी को अत्यधिक महत्व देने लगते हैं जो उनके समायोजन में बाधा पैदा करती है।

शोध का शैक्षिक निहितार्थः– इस अध्ययन से यह स्पष्ट है मूक–बधिर बालक दृष्टिहीन बालकों की अपेक्षा अधिक समायोजित हैं। अतः मूक–बधिर बालकों की अपेक्षा दृष्टिहीन बालकों पर अधिक ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है ताकि दृष्टिहीन बालक भी मूक–बधिर बालकों की तरह ही समायोजन में आसानी महसूस कर सकें।

समायोजन के विभिन्न आयामों पर दृष्टिपात करने पर यह ज्ञात होता है कि मूक–बधिर बालकों की अपेक्षा दृष्टिहीन बालकों में समाज विरोधी प्रवृत्तियाँ, प्रत्याहार प्रवृत्तियाँ, घबराहट की प्रवृत्तियाँ, समायोजन कौशल, अपर्याप्तता की भावना, आक्रामक प्रवृत्तियाँ ज्यादा पायी जाती हैं। मूक–बधिर बालकों की तुलना में दृष्टिहीन बालकों पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। उन्हें समायोजित करने के लिए विद्यालय तथा विकलांगों के घर, परिवार तथा समाज में ऐसा वातावरण प्रदान किया जाना चाहिए जिससे वे उन्हें अपनी विकलांगता को सामान्य ढंग से ले सकें। उनमें ऐसे कौशलों का विकास किया जाना चाहिए कि वे समाज में सामान्य बालकों की तरह अपने जीवन को उपयोगी समझें तथा आनन्द के साथ जीवन यापन कर सकें।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः

- दुबे, इन्दु (1971), शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार, *राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,* जयपुर, पृ0 299।
- पाण्डेय, के0पी0 (1985), नवीन शिक्षा मनोविज्ञान, *अमिताश प्रकाशन,* गाजियाबाद, पृ0 98,104,105,120।
- राम, पी0एस0 (1992), जूनियर हाईस्कूल कक्षाओं में अध्ययनरत अन्ध, मूक–बधिर एवं सामान्य बालकों के समायोजन, व्यक्तित्व, स्वास्थ्य एवं समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन, *अप्रकाशित पी0एच0डी0,* काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।